उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम।।४३।।

उत्सन्न=नष्ट हुए; **कुलधर्माणाम्**=कुलधर्म वाले; **मनुष्याणाम्**=मनुष्यों का; **जनार्दन**=हे कृष्ण; **नरके**=नरक में; **अनियतम्**=नित्य; **वासः**=निवास; **भवति**=होता है; **इति**=इस प्रकार; **अनुशुश्रुम**=गुरुपरम्परा से सुना है।

अनुवाद

हे जनार्दन! मैंने गुरुपरम्परा से सुना है कि कुलधर्म का विनाश करने वालों का नित्य नरक में वास होता है।।४३।।

तात्पर्य

अपने अनुभव की अपेक्षा परम्परागत आचार्यों से उसने जो कुछ श्रवण किया है, अर्जुन उसी के आधार पर तर्क कर रहा है। इस श्रौत-परम्परा से ही यथार्थ ज्ञान होता है। ज्ञानी सत्पुरुष की सहायता के बिना उस ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। वर्णाश्रमधर्म की एक पद्धति के अनुसार मृत्यु से पूर्व पाप कर्म के लिए प्रायश्चित किया जाता है। पापात्मा मनुष्य को इस विधि का उपयोग अवश्य करना चाहिए। ऐसा न करने पर पापकर्मवश नारकीय लोकों की दुर्गतिमय योनियों में निश्चित रूप से अधःपतन होगा।

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः।।४४।।

अहः=अहो; **बत**=आश्चर्य है कि; **महत्**=महान्; **पापम्**=पाप कर्म; **कर्तुम्**=करने को; **व्यवसिताः**=तत्पर हैं; **वयम्**=हम; **यत्**=जिस से; **राज्य-सुखलोभेन**=राज्य और सुख के लोभ से; **हन्तुम्**=मारने के लिए; **स्वजनम्**=अपने कुल को; **उद्यताः**=उद्यत हुए हैं।

अनुवाद

अहो! यह कैसा महान् आश्चर्य है कि राज्यसुख के लोभ से हम स्वजनवधरूप महान् पापकर्म करने को उद्यत हो रहे हैं।।४४।।

तात्पर्य

स्वार्थ के वशीभूत हुआ मनुष्य अपने भाई, पिता अथवा माता के वध जैसे जघन्य पाप-कर्म तक में प्रवृत्त हो सकता है। विश्व-इतिहास में ऐसे प्रचुर उदाहरण उपलब्ध हैं। सन्त तथा भक्त के स्वभाव वाला अर्जुन सदाचार का स्मरण रखते हुए ऐसी क्रिया न करने में सावधान है।

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्।।४५।।